अंक योजना **अति गोपनीय** **(केवल आंतरिक और सीमित उपयोग हेतु)** **सेकंडरी स्कूल वार्षिक परीक्षा, 2026) X** **विषय – सामाजिक विज्ञान (087)** **पेपर कोड– 32/5/1**	
सामान्य निर्देश : –	
1.	आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में आकलन प्रक्रिया सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। भविष्य, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे को प्रभावित कर सकती हैं। गलतियों से बचने के लिए, यह अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, आपको स्पॉट मूल्यांकन दिशानिर्देशों को ध्यान से पढ़ना और समझना चाहिए।
2.	**मूल्यांकन प्रक्रिया गोपनीय नीति का एक हिस्सा है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं की गोपनीयता, किए गए मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं से संबंधित है। इसका किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा प्रणाली के पटरी से उतरने का कारण बन सकता है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज को किसी से भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना भारतीय न्याय संहिता के तहत कार्रवाई को आमंत्रित कर सकता है।**
3.	अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन किया जाना है। यह किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का नियमतः पालन किया जाना चाहिए। हालांकि, मूल्यांकन करते समय, जो उत्तर नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं अथवा नवाचारी हैं, यदि वह ठीक है उसका मूल्यांकन कर उसे उचित अंक प्रदान करें अन्यथा उन्हें अंक नहीं दिए जाएंगे। 10वीं कक्षा में, योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय, कृपया दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और भले ही उत्तर अंकन योजना से न हो, लेकिन परीक्षार्थियों द्वारा सही योग्यता प्रदर्शित की गई हो तो उसे उचित अंक प्रदान कीजिए।
4.	प्रश्न पत्र को चार (04) खंडों में विभाजित किया गया है, अर्थात् खंड–क, खंड–ख, खंड–ग और खंड–घ। खंड–क इतिहास है, खंड–ख भूगोल है, खंड–ग राजनीति विज्ञान है और खंड–घ अर्थशास्त्र हैं। 1 – उत्तर लिखने के लिए विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान की उत्तर–पुस्तिका को 04खंडों में विभाजित करेंगे। 2– प्रश्नों के उत्तर केवल संबंधित खंड के लिए निर्धारित स्थान के भीतर ही लिखे जाने हैं। 3– किसी एक खंड का उत्तर किसी अन्य खंड में नहीं लिखा जाना चाहिए और न ही उसके साथ मिलाया जाना चाहिए। 4– यदि उत्तर आपस में मिल जाते हैं, तो उनका मूल्यांकन नहीं किया जाएगा और कोई अंक प्रदान नहीं किए जाएंगे। 5– परिणाम घोषित होने के बाद सत्यापन या पुनर्मूल्यांकन प्रक्रिया के दौरान भी ऐसी गलतियों को स्वीकार नहीं किया जाएगा और न ही उन पर कोई विचार किया जाएगा।
5.	अंक– योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मूल्य बिन्दु शामिल हैं । ये केवल दिशा निर्देशों की प्रकृति में है और सम्पूर्ण उत्तर नहीं हैं । विद्यार्थियों की अपनी अभिव्यक्ति हो सकती है और यदि अभिव्यक्ति सही है तो उचित अंक प्रदान किए जाने चाहिए।
6.	मुख्य परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकन की गई पहली पांच उत्तर पुस्तिकाओं को देखना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है । यदि मूल्यांकन में अंतर है तो चर्चा एवं संवाद से उसे अंतर को समाप्त किया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए रखी गई शेष उत्तर पुस्तिकाएं यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएं कि व्यक्तिगत मूल्यांकनकर्ताओं के मध्य महत्वपूर्ण अंतरों को समाप्त किया जा चुका है।
7.	जब भी उत्तर सही होगा, मूल्यांकनकर्ता (√) चिह्नित करेंगे। गलत उत्तर के लिए 'X' चिह्नित करें। बहुधा मूल्यांकनकर्ता मूल्यांकन करते समय सही प्रकार का चिन्ह नहीं लगाते जिससे यह आभास होता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिया गया है। यह सबसे सामान्य गलती है जो मूल्यांकनकर्ता लगातार कर रहे हैं।
8.	यदि किसी प्रश्न के भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों को जोड़ दिया जाना चाहिए और बाएं हाथ के मार्जिन में लिखा जाना चाहिए और घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
9.	यदि किसी प्रश्न में कोई भाग नहीं है, तो बाएं हाथ के मार्जिन में अंक दिए जाने चाहिए और उन्हें घेरे में लिखा जाना चाहिए। इसका सख्ती से अनुपालन किया जाना आवश्यक है।
10.	यदि किसी परीक्षार्थी ने एक प्रश्न को दुबारा हल किया है , तो अधिक अंक वाले प्रयास की गणना मूल्याकंन के लिए किया जाना चाहिए। अन्य उत्तर के अंक के लिए अतिरिक्त प्रष्न लिखिए।
11.	एक ही प्रकार की गलतियों के लिए संचयी प्रभाव से अंक नहीं काटा जाए। इसके लिए लिए केवल एक बार अंक काटा जाएगा।
12.	अंकों का एक पूर्ण पैमाने .....80..... (उदाहरण प्रश्न पत्र में दिए गए 70/60/50/40/30 अंक) का उपयोग किया जाना है। कृपया पूर्ण अंक देने में संकोच न करें यदि उत्तर इसके योग्य है।
13.	प्रत्येक परीक्षक को आवश्यक रूप से पूरे कार्य घंटों अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे के लिए मूल्यांकन कार्य करना होता है और मुख्य विषयों में प्रति दिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं और अन्य विषयों में प्रति दिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होता है (विवरण स्पॉट दिशानिर्देशों में दिया गया है)। यह कम किए गए पाठ्यक्रम और प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या को देखते हुए है।

14.	सुनिश्चित करें कि पूर्व में परीक्षक द्वारा की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की त्रुटियों को आप नहीं दोहराएँः • उत्तर या उसके किसी भाग को उत्तर पुस्तिका में बिना मूल्यांकन के छोड़ना। • किसी उत्तर के लिए निश्चित किए गए अंक से अधिक अंक प्रदान करना। • एक उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग। • उत्तर पुस्तिका के आंतरिक पृष्ठों से शीर्षक पृष्ठ पर अंकों का गलत स्थानांतरण। • शीर्षक पृष्ठ पर प्रश्नवार गलत योग। • शीर्षक पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग। • गलत कुल योग। • शब्दों और अंकों में अंक का मिलान नहीं होना। • उत्तरपुस्तिका से ऑनलाइन अवॉर्ड सूची में अंकों का गलत स्थानान्तरण। • उत्तर सही के रूप में चिह्नित हैं, लेकिन अंक नहीं दिए गए हैं। (सुनिश्चित करें कि सही का निशान सही और स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह केवल एक पंक्ति होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए X के साथ भी ऐसा ही है।) • उत्तर के आधे या एक भाग को सही और शेष को गलत के रूप में चिह्नित किया गया, लेकिन कोई अंक नहीं दिया गया।
15.	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूरी तरह से गलत पाया जाता है, तो इसे क्रॉस (X) के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिए और शून्य (0) अंक दिए जाने चाहिए।
16.	किसी भी अमूल्यांकित हिस्से, शीर्षक पृष्ठ पर अंक न ले जाना, या उम्मीदवार द्वारा पाई गई कुल त्रुटि, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचाएगा। इसलिए, सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए, यह फिर से दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण पालन किया जाए।
17.	वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले परीक्षकों को स्पॉट मूल्यांकन के लिए दिशा–निर्देशों में दिए गए दिशा–निर्देशों से खुद को परिचित करना चाहिए।
18.	प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक शीर्षक पृष्ठ पर ले जाया गया है, सही ढंग से कुल और अंकों को शब्दों में लिखा गया है।.
19.	बोर्ड उम्मीदवारों के आवेदक के अनुरोध पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने की अनुमति देता है और संबंधित शुल्क के भुगतान पर पुनर्मूल्यांकन का अवसर भी प्रदान करता है। मुख्य परिक्षक / अतिरिक्त मुख्य परीक्षको को पुनः स्मरण कराया जाता है कि वे सुनिश्चित करे कि मूल्यांकन अंक योजना में दिए गए मूल्य बिन्दुओं के अनुसार ही किया गया है।

MARKING SCHEME
Social Science (Subject Code- 087) 2026
(PAPER CODE: 32/5/1)

SET 1
MM:80

प्रश्न संख्या	अपेक्षित मूल्य बिन्दु	पृष्ठ संख्या	अंक
	खंड- क **(इतिहास)**		**20**
1.	**(B)** II, IV, III, I	**31,39**	**1**
2.	**(A)** दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है |	**55**	**1**
3.	**(D)** जेर्मेनिया **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 3 के स्थान पर है |** **(D)** नपोलियन बोनापार्ट	**23** **6**	**1** **1**
4.	**(C)** राजा राममोहन राय -संवाद कौमुदी	**121**	**1**
5.	**(a) सोलहवीं सदी के बाद बहुत से यूरोपीय लोग अमेरिका क्यों गए ? स्पष्ट कीजिए |** **(i)** उन्नीसवीं सदी तक यूरोप में गरीबी और भूख का साम्राज्य था। **(ii)** शहरों में बेहिसाब भीड़ थी और बीमारियों का बोलबाला था। धार्मिक टकराव आम थे। धार्मिक असंतुष्टों को कड़ा दंड दिया जाता था। **(iii)** इस वजह से हज़ारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका जाने लगे। अठारहवीं सदी तक अमेरिका में अफ्रीका से पकड़ कर लाए गए गुलामों को रोपण कृषि के काम में झोंक कर यूरोपीय बाज़ारों के लिए कपास और चीनी का उत्पादन किया जाने लगा था। **(iv)** सोलहवीं सदी से अमेरिका की विशाल भूमि और बेहिसाब फसलें व खनिज पदार्थ हर दिशा में जीवन का रूप-रंग बदलने लगे | इस कारण और भी यूरोपवासी अमेरिका जाने लगे |	**55**	**2x1=2**

	(v) आज के पेरू और मेक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं**,** खासतौर से चाँदी, ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले उसके व्यापार को गति दी | **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) प्राचीन काल के दौरान व्यापार और लम्बी दूरी की यात्राओं ने बीमारियों के प्रसार में किस प्रकार योगदान दिया? स्पष्ट कीजिए |** **(i)** प्राचीन काल से ही यात्री, व्यापारी, पुजारी और तीर्थयात्री ज्ञान, अवसरों और आध्यात्मिक शांति के लिए या उत्पीड़न / यातनापूर्ण जीवन से बचने के लिए दूर-दूर की यात्राओं पर जाते रहे हैं। **(ii)** अपनी यात्राओं में ये लोग तरह-तरह की चीजें, पैसा, मूल्य-मान्यताएँ, हुनर, विचार, आविष्कार और यहाँ तक कि कीटाणु और बीमारियाँ भी साथ लेकर आए । **(iii)** बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं का दूर-दूर तक पहुँचने का इतिहास भी सातवीं सदी तक ढूँढ़ा जा सकता है। **(iv)** उदाहरण के लिए, जब यूरोपियों ने अमेरिका को जीतने का प्रयास किया तो खास तौर से व्यापार और लंबी दूरी की यात्रा ने भी रोगों के फैलाव में योगदान दिया | **(v)** स्पेनिश और पुर्तगाली विजेता अपने साथ चेचक जैसे कीटाणु अमेरिका ले गए। स्थानीय निवासियों में इन रोगों से बचने की रोग-प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी। इसने पूरे के पूरे समुदायों को ख़त्म कर डाला। **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**53-55**	**2x1=2**
6.	**(a)"मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रची |" उदाहरणों सहित इस कथन की व्याख्या कीजिए |** **(i)** छपाई के चलते ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ। उन्होंने रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया, और माँग की कि हर चीज़ को तर्क और विवेक की कसौटी पर ही कसा जाए।	**115-116**	**3x1=3**

	(ii) उन्होंने चर्च की धार्मिक और राज्य की निरंकुश सत्ता पर प्रहार किया । वॉल्तेयर और रूसो के लेखन का व्यापक पाठक वर्ग था| **(iii)** छपाई ने वाद-विवाद-संवाद की नयी संस्कृति को जन्म दिया। सारे पुराने मूल्य, संस्थाओं और कायदों पर आम जनता के बीच बहस-मुबाहिसे हुए और उनके पुनर्मूल्यांकन का सिलसिला शुरू हुआ । तर्क की ताक़त से परिचित यह नयी 'पब्लिक' धर्म और आस्था को प्रश्नांकित करने का मोल समझ चुकी थी। इस तरह बनी 'सार्वजनिक दुनिया' से सामाजिक क्रांति के नए विचारों का सूत्रपात हुआ। **(iv)** 1780 के दशक तक राजशाही और उसकी नैतिकता का मज़ाक उड़ाने वाले साहित्य का ढेर लग चुका था। इस प्रक्रिया में सामाजिक व्यवस्था को लेकर तमाम सवाल खड़े किए गए। **(v)** कार्टूनों और कैरिकेचरों (व्यंग्य चित्रों) में यह भाव उभरता था कि जनता तो मुश्किलों में फँसी है जबकि राजशाही भोग-विलास में डूबी हुई है। भूमिगत घूमने वाले इस साहित्य ने लोगों को राजतंत्र के ख़िलाफ़ भड़काया । **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु । **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा**		
	(b) "उन्नीसवीं सदी के दौरान यूरोप में छापेखाने की तकनीक में अनेक नवाचार हुए|" उदाहरणों सहित इस कथन की व्याख्या कीजिए| **(i)** उन्नीसवीं सदी के दौरान छापेखाने की तकनीक में लगातार सुधार हुए जिससे छापेखाने की गुणवत्ता और मात्रा दोनों में बढ़ोत्तरी हुई । **(ii)** उन्नीसवीं सदी के मध्य तक न्यूयॉर्क के रिचर्ड एम. हो ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था। इससे प्रति घंटे 8000 शीट या ताव छप सकते थे। **(iii)** उन्नीसवीं सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया था, जिससे एक साथ छह रंग की छपाई मुमकिन थी। **(iv)** बीसवीं सदी के शुरू से ही बिजली से चलनेवाले प्रेस के बल पर छपाई का काम बड़ी तेज़ी से होने लगे।	**118**	**3x1=3**

	(v) एक-दो और चीजें हुईं। काग़ज़ डालने की विधि में सुधार हुआ, प्लेट की गुणवत्ता बेहतर हुई, स्वचालित पेपर- रील और रंगों के लिए फोटो- विद्युतीय नियंत्रण भी काम में आने लगे। इस तरह कई छोटी-छोटी मशीनी इकाइयों में कुल सुधार की बदौलत छपे हुए पन्ने का रंग-रूप ही बदल गया। **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है|**		
7	**(a) उन्नीसवीं सदी के अंत में बाल्कन क्षेत्र में हुए राष्ट्रवादी तनावों की परख कीजिए |** **(i)** बाल्कन क्षेत्र में भौगोलिक और जातीय भिन्नता थी। इसमें आधुनिक रोमानिया, बुल्गेरिया, अल्बेनिया यूनान इत्यादि शामिल थे। क्षेत्र के निवासियों को आमतौर पर स्लाव पुकारा जाता था। **(ii)** बाल्कन क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में था । **(iii)** बाल्कन क्षेत्र में रूमानी राष्ट्रवाद के विचारों के फैलने और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन से स्थिति काफ़ी विस्फोटक हो गई। **(iv)** एक के बाद एक उसके अधीन यूरोपीय राष्ट्रीयताएँ उसके चंगुल से निकल कर स्वतंत्रता की घोषणा करने लगीं। **(v)** बाल्कन लोगों ने आज़ादी या राजनीतिक अधिकारों के अपने दावों को राष्ट्रीयता का आधार दिया। उन्होंने इतिहास का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए किया कि वे कभी स्वतंत्र थे किंतु तत्पश्चात विदेशी शक्तियों ने उन्हें अधीन कर लिया। **(vi)** जैसे-जैसे विभिन्न स्लाव राष्ट्रीय समूहों ने अपनी पहचान और स्वतंत्रता की परिभाषा तय करने की कोशिश की, बाल्कन क्षेत्र गहरे टकराव का क्षेत्र बन गया। **(vii)** बाल्कन राज्य एक-दूसरे से भारी ईर्ष्या करते थे और हर एक राज्य अपने लिए ज़्यादा से ज्यादा इलाका हथियाने की उम्मीद रखता था । **(viii)** परिस्थितियाँ और अधिक जटिल इसलिए हो गईं क्योंकि बाल्कन क्षेत्र में बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा होने लगी। **(ix)** इस समय यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापार, और उपनिवेशों के साथ नौसैनिक और सैन्य ताक़त के लिए गहरी प्रतिस्पर्धा थी। **(x)** जिस तरह बाल्कन समस्या आगे बढ़ी उसमें यह प्रतिस्पर्धाएँ खुल कर सामने आईं। रूस, जर्मनी, इंग्लैंड, ऑस्ट्रो-हंगरी की हर ताक़त बाल्कन पर अन्य शक्तियों की पकड़ को	**26**	**5x1=5**

	कमजोर करके क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाना चाहती थीं। इससे इस इलाके में कई युद्ध हुए और अंततः प्रथम विश्व युद्ध हुआ। **(xi)** कोई अन्य महत्वपूर्ण बिंदु। **किन्हीं पांच बिन्दुओं की परख अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) उन्नीसवीं सदी के दौरान इटली के एकीकरण में ज्युसेपे मेत्सिनी की भूमिका की परख कीजिए |** **(i)** ज्युसेपी मेत्सिनी का जन्म 1805 में जेनोआ में हुआ था और वह कार्बोनारी नामक गुप्त संगठन का सदस्य बन गया। चौबीस साल की युवावस्था में लिगुरिया में क्रांति करने के लिए उसे बहिष्कृत कर दिया गया। **(ii)** 1830 के दशक में ज्युसेपी मेत्सिनी ने एकीकृत इतालवी गणराज्य के लिए एक सुविचारित कार्यक्रम प्रस्तुत करने की कोशिश की | **(iii)** मेत्सिनी का विश्वास था कि ईश्वर की मर्जी के अनुसार राष्ट्र ही मनुष्यों की प्राकृतिक इकाई थी। अतः इटली छोटे राज्यों और प्रदेशों के पैबंदों की तरह नहीं रह सकता था। **(iv)** उसे जोड़ कर राष्ट्रों के व्यापक गठबंधन के अंदर एकीकृत गणतंत्र बनाना ही था। **(v)** उनका मानना था कि यह एकीकरण ही इटली की मुक्ति का आधार हो सकता था। **(vi)** तत्पश्चात, अपने विचारों और लक्ष्यों के प्रचार-प्रसार के लिए उसने दो भूमिगत संगठनों की स्थापना की। पहला था मार्सेई में यंग इटली और दूसरा बर्न में यंग यूरोप | **(vii)** उसका मानना था कि राष्ट्र-राज्य की स्थापना से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है | **(viii)** मेत्सिनी द्वारा राजतंत्र का घोर विरोध करके और प्रजातांत्रिक गणतंत्रों के अपने स्वप्न से मेत्सिनी ने रूढ़िवादियों को डरा दिया, जो कि इटली के एकीकरण के विरोधी थे । **(ix)** उसके विचारों और रणनीतियों से अन्य क्रातिकारी प्रेरित हुए और इटली का एकीकरण संभव हो सका| **(x)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पांच बिन्दुओं की परख अपेक्षित है|**	**12**	**5x1=5**
8.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**	**48**	**1+1+2=4**

सामूहिक अपनेपन का भाव

जैसे-जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन आगे बढ़ा, राष्ट्रवादी नेता लोगों को एकजुट करने और उनमें राष्ट्रवाद की भावना भरने के लिए इस तरह के चिन्हों और प्रतीकों के बारे में और ज्यादा जागरूक होते गए | इतिहास की पुनर्व्याख्या राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का एक और साधन थी | उन्नीसवीं सदी के अंत तक आते-आते बहुत सारे भारतीय यह महसूस करने लगे थे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जगाने के लिए भारतीय इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए | अंग्रेजो की नज़र में भारतीय पिछड़े हुए और आदिम लोग थे जो अपना शासन खुद नहीं संभाल सकते | इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे | उन्होंने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू कर दिया जब कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल-फूल रहे थे | उनका कहना था कि इस महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया | इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था |

8.1 स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतीकों ने भारतीयों को एकजुट करने में कैसे मदद की? 1

(i) भारत माता जैसे प्रतीक के प्रति भक्ति को भारत में राष्ट्रवाद का प्रमाण माना जाने लगा |

(ii) गीतों, संगीत और कविताओं के रूप में लोक परंपरा को प्रोत्साहित किया गया ताकि हमारी राष्ट्रीय पहचान की खोज की जा सके और अपने अतीत पर गर्व की भावना को पुनर्स्थापित किया जा सके।

(iii) राष्ट्रीय ध्वज को ले जाना, मार्च के दौरान इसे ऊँचा उठाना, विरोध का प्रतीक बन गया।

(iv) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु ।

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है|

8.2 राष्ट्रवादियों को भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? 1

(i) अपने लेखन में अंग्रेज भारतियों को पिछड़े और आदिम मानते थे जो अपना शासन खुद नहीं संभाल सकते | इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे |

(ii) इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था |

(iii) कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु ।

किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है |

	8.3 राष्ट्रवादी इतिहास में भारत के अतीत और वर्तमान को कैसे चित्रित किया गया था? 2 **(i)** राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू कर दिया जब कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल-फूल रहे थे। **(ii)** उनका कहना था कि इस महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया। **(iii)** इस राष्ट्रवादी इतिहास में पाठकों को अतीत में भारत की महानता व उपलब्धियों पर गर्व करने और ब्रिटिश शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाने का आव्हान किया जाता था। **(iv)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है।**		
9.	**नोट- कृपया सलंग्न मानचित्र देखें।** **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिएप्रश्न संख्या 9 के स्थान पर हैं** **(9.1) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ से गांधीजी ने नील की खेती करने वाले किसानों के लिए सत्याग्रह शुरू किया। 1** चंपारण **(9.2) महाराष्ट्र में उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ 1920 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। 1** नागपुर		**1+1=2**
	खंड- ख **(भूगोल)**		**20**
10.	**(B)** काली मृदा	**7**	**1**
11.	**(B)** मध्य प्रदेश	**15**	**1**
12.	**(C)** चावल, ज्वार, मक्का	**32**	**1**
13.	**(C)** उर्जा खनिज	**43**	**1**
14.	**(D)** भूमि जहाँ एक कृषि वर्ष से खेती न की गई हो।	**4**	**1**

15.	(a) (b) (c) (d) **(C)** (iv) (iii) (ii) (i)	**15**	**1**
16.	**भारतीय कृषि में सुधार के लिए सरकार द्वारा किए गए उपायों को स्पष्ट कीजिए |** **(i)** स्वतंत्रता के पश्चात् देश में संस्थागत सुधार करने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा ज़मींदारी आदि समाप्त करने को प्राथमिकता दी गई | प्रथम पंचवर्षीय योजना में भूमि सुधार मुख्य लक्ष्य था | **(ii)** बहु-उद्देशीय नदी परियोजनाएँ शुरू की गई और सिंचाई, बिजली और बाढ़ नियंत्रण आदि के लिए बाँध तथा नहरों का निर्माण किया गया | **(iii)** पैकेज टेक्नोलॉजी पर आधारित हरित क्रांति तथा श्वेत क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) जैसी कृषि सुधार के लिए कुछ रणनीतियां आरम्भ की गई थी | **(iv)** 1980 तथा 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जो संस्थागत और तकनीकी सुधारों पर आधारित था | **(v)** सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग तथा बीमारी के लिए फसल बीमा के प्रावधान किए गए | **(vi)** किसानों को कम दर पर पर ऋण सुविधाएँ प्रधान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों तथा बैंकों की स्थापना की गई | **(vii)** किसानों के लाभ के लिए भारत सरकार ने 'किसान क्रेडिट कार्ड'(के. सी.सी.) और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना(पीएआईएस) भी शुरू की गई है | **(viii)** आकाशवाणी और दूरदर्शन पर किसानों के लिए मौसम की जानकारी के बुलेटिन और कृषि कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं | **(ix)** किसानों को बिचौलियों और दलालों के शोषण से बचाने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य और कुछ महत्त्वपूर्ण फसलों के लाभदायक खरीद की सरकार घोषणा करती है | **(x)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**38-39**	**2x1=2**
17.	**(a) "सतत पोषणीय विकास के लिए उर्जा सरंक्षण आवश्यक है |" उपयुक्त तर्कों के साथ इस कथन की पुष्टि कीजिए |** **(i)** आर्थिक विकास के लिए उर्जा एक आधारभूत आवश्यकता है | राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक सेक्टर- कृषि, उद्योग,	**55**	**5x1=5**

	परिवहन, वाणिज्य व घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उर्जा निवेश की आवश्यकता है | **(ii)** उर्जा के विकास के सतत पोषणीय मार्ग को विकसित करने की अति आवश्यकता है | **(iii)** उर्जा सरंक्षण की प्रोन्नति और नवीकरणीय उर्जा संसाधनों का बढ़ता प्रयोग सतत पोषणीय उर्जा के दो आधार हैं | **(iv)** ऊर्जा के गैर-परंपरागत स्रोतों- सौर, पवन, बायोगैस, भू-तापीय आदि का उपयोग करना| **(v)** गैर-परंपरागत स्रोत नवीकरणीय, पर्यावरण के अनुकूल और सस्ते हैं तथा कोई अवशेष नहीं छोड़ते हैं | **(vi)** उर्जा के सीमित संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग के लिए भारत सावधानीपूर्ण उपागम अपना रहा है | **(vii)** उदाहरणार्थ एक जागरूक नागरिक के रूप में हम यातायात के लिए निजी वाहन की अपेक्षा सार्वजानिक वाहन का उपयोग कर अपना योगदान दे सकते हैं | **(viii)** इसी तरह, जब प्रयोग न हो रही हो तो बिजली बंद करके, विद्युत बचत करने वाले उपकरणों के उपयोग करके तथा गैर-पारंपरिक उर्जा साधनों के प्रयोग से हम अपना योगदान दे सकते हैं | **(ix)** यह माना जाता है कि उर्जा का सरंक्षण करके हम पारिस्थितिकीय संतुलन को बचा सकते हैं | **(x)** भारत उर्जा दक्षता में भी सुधार कर रहा है | **(xi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) "खनिज विभिन्न रूपों और प्रकारों में पाए जाते हैं और प्रत्येक के अलग-अलग गुण होते हैं |" उपयुक्त तर्कों के साथ इस कथन की पुष्टि कीजिए|** **(i)** आग्नेय तथा कायांतरित चट्टानों में खनिज दरारों, जोड़ों, भ्रंशों व विदरों में ऊपर आते हुए ठंडे होकर जम जाते हैं। छोटे जमाव शिराओं के रूप में और बृहत् जमाव परत के रूप में पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, धात्विक खनिज जैसे जस्ता, ताँबा, जिंक और सीसा आदि | **(ii)** अनेक खनिज अवसादी चट्टानों के अनेक खनिजों निर्माण क्षैतिज परतों में निक्षेपण, संचयन व जमाव का परिणाम है।	**43-49**	**5x1=5**

	कोयला तथा कुछ अन्य प्रकार के लौह अयस्कों का निर्माण लंबी अवधि तक अत्यधिक ऊष्मा व् दबाव का परिणाम है | **(iii)** अवसादी चट्टानों के दूसरी श्रेणी के खनिजों में जिप्सम, पोटाश, नमक व सोडियम सम्मिलित हैं	इनका निर्माण शुष्क प्रदेशों में वाष्पीकरण के फलस्वरूप होता है | **(iv)** खनिजों के निर्माण की एक अन्य विधि धरातलीय चट्टानों का अपघटन है। चट्टानों के घुलनशील तत्त्वों के अपरदन के पश्चात् अयस्क वाली अवशिष्ट चट्टानें रह जाती हैं। बॉक्साइट का निर्माण इसी प्रकार होता है। **(v)** पहाड़ियों के आधार तथा घाटी तल की रेत में जलोढ़ जमाव के रूप में भी कुछ खनिज पाए जाते हैं। ये निक्षेप 'प्लेसर निक्षेप' के नाम से जाने जाते हैं। इनमें प्राय: ऐसे खनिज होते हैं जो जल द्वारा घर्षित नहीं होते। इन खनिजों में सोना, चाँदी, टिन व प्लेटिनम प्रमुख हैं। **(vi)** महासागरीय जल में भी विशाल मात्रा में खनिज पाए जाते हैं लेकिन इनमें से अधिकांश के व्यापक रूप से विसरित होने के कारण इनकी आर्थिक सार्थकता कम है। फिर भी सामान्य नमक, मैगनीशियम तथा ब्रोमाइन ज्यादातर समुद्री जल से ही प्रग्रहित (derived) होते हैं। महासागरीय तली भी मैंगनीज़ ग्रंथिकाओं (nodules) में धनी हैं। **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं पांच बिन्दुओं का व्याख्या अपेक्षित है|**		
18.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना** *बाढ़ों से न केवल जान और माल का नुकसान हुआ अपितु बृहत् स्तर पर मृदा अपरदन भी हुआ | बाँध के जलाशय पर तलछट जमा होने का अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि एक प्राकृतिक उर्वरक है बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँचती जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढती हैं | यह भी माना जाता है कि बहुउद्देशीय योजनाओं के कारण भूकंप आने की संभावना भी बढ़ जाती है और अत्यधिक जल के उपयोग से जल-जनित बीमारियाँ, फसलों में कीटाणु-जनित बीमारियाँ और प्रदूषण फैलते हैं |* *सिंचाई ने कई क्षेत्रों में फसल प्रारूप परिवर्तित कर दिया है जहाँ जलगहन और वाणिज्य फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं | इससे मृदाओं के लवणीकरण जैसे गंभीर पारिस्थितिकीय परिणाम हो सकते हैं |* *प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना देश के सभी कृषि खेतों के लिए सुरक्षात्मक सिंचाई के कुछ साधनों तक पहुँच सुनिश्चित करती है, जिससे वांछित ग्रामीण समृद्धि आती है | इस कार्यक्रम के कुछ व्यापक उद्देश्य हैं, जैसे खेत में पानी की वास्तविक उपलब्धता को बढ़ाना और सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत बुवाई योग्य क्षेत्र का विस्तार करना, अपव्यय को कम करने और अवधि और सीमा दोनों में उपलब्धता बढ़ाने के लिए खेत के उपयोग की दक्षता में सुधार करना, सिंचाई और अन्य*	**23**	**1+1+2=4**

	जल बचत प्रौधोगिकियाँ (प्रति बूँद अधिक फसल) और सतत जल सरंक्षण प्रणालियों का अपनाना आदि| **18.1 भूमि निम्नीकरण में बाढ़ की भूमिका को स्पष्ट कीजिए| 1** **(i)** बाढ़ से मृदा अपरदन होता है | **(ii)** बाँध के कारण जलाशय पर तलछट जमा हो जाता है जिसका अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि एक प्राकृतिक उर्वरक है बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँचती जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढ़ती हैं| **(iii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किसी एक बिन्दु की व्याख्या अपेक्षित है |** **18.2 सिंचाई ने फसल प्रारूप को कैसे बदल दिया है? 1** **(i)** किसान जलगहन फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं| **(ii)** किसान वाणिज्य फसलों की ओर आकर्षित हो रहे हैं| **(iii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किसी एक बिन्दु की व्याख्या अपेक्षित है |** **18.3 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' के किन्हीं दो उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए| 2** **(i)** खेत में पानी की वास्तविक उपलब्धता को बढ़ाना **(ii)** सुनिश्चित सिंचाई (हर खेत को पानी) के तहत बुवाई योग्य क्षेत्र का विस्तार करना **(iii)** अपव्यय को कम करने के लिए खेत में जल के उपयोग की दक्षता में सुधार करना **(iv)** सतत जल सरंक्षण प्रणालियों का अपनाना **(v)** जल के अपव्यय को कम करने और सिंचाई की दक्षता को बढ़ाने के लिए ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को अपनाना **(vi)** सिंचाई और अन्य जल बचत प्रौधोगिकियाँ (प्रति बूँद अधिक फसल) आदि | **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं दो बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
19.	**नोट- कृपया इस अंक योजना के अंतिम पृष्ठ पर सलंग्न मानचित्र को देखिए |**		**3x1=3**

	नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 19 के स्थान पर है : **किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए |** **(i) सतलुज नदी पर बने बाँध का नाम लिखिए|` 1** भाखड़ा नांगल **(ii) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ गुजरात मेंआणविकउर्जा संयंत्र स्थित है| 1** काकरापारा **(iii) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ उत्तर प्रदेश में सॉफ्टवेयर प्रौधोगिकी पार्क स्थित है | 1** नॉएडा **(iv) उस स्थान का नाम लिखिए जहाँ महाराष्ट्र में अंतर्राष्ट्रीय वायु पत्तन स्थित है| 1** मुंबई / छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन		
	खंड- ग **(राजनीति विज्ञान)**		**20**
20.	**(A)** दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है |	**4**	**1**
21.	**(C)** राष्ट्रों के बीच धन का असमान वितरण **नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 3 के स्थान पर है |** **(C)** भारत	**67** **63-72**	**1**
22.	**(A)** भारतीय जनता पार्टी और आम आदमी पार्टी	**56**	**1**
23.	**(B)** केवल I, II और IV सही हैं |	**25**	**1**

24.	**खेलों में नेतृत्वकारी भूमिकाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के कोई दो उपाय सुझाइए |** **(i)** महिलाओं को प्रारंभ से ही खेल संबंधित आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। **(ii)** शैक्षिणिक संस्थानों और सरकार को खेल संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करने चाहिए। **(iii)** महिलाओं को पौष्टिक आहार प्रदान किया जाना चाहिए। **(iv)** किसी भी खेल में महिलाओं को पुरुषों के समान वेतन दिए जाने को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। **(v)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं दो सुझावों की व्याख्या अपेक्षित हैं|**	**32-35**	**2x1=2**
25.	**"किसी अन्य विकल्प की तुलना में लोकतंत्र शासन का बेहतर रूप है |" इस कथन की परख कीजिए |** **(i)** नागरिकों के बीच समानता को बढ़ावा देता है| **(ii)** व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है | **(iii)** निर्णय लेने की गुणवत्ता में सुधार करता है | **(iv)** संघर्षों को सुलझाने का एक तरीका प्रदान करता है | **(v)** गलतियों को सुधारने की जगह देता है। **(vi)** नागरिकों के पास अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होती है। **(vii)** उनके पास मतदान करने और अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार भी है। यह वैध सरकार होती है | **(viii)** लोकतंत्र स्वयं की सरकार बनाने की स्वतंत्रता प्रदान करता है जबकि तानाशाही स्व-निर्मित हितों पर आधारित होती है। **(ix)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं दो बिन्दुओं की परख अपेक्षित है |**	**63-72**	**2x1=2**

26.	**भारतीय संघवाद में 'त्रि-सूचियों की प्रणाली' कैसे कार्य करती है ? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए |** **(i)** भारत के संविधान ने स्पष्ट रूप से संघ सरकार और राज्य सरकारों के बीच विधायी शक्तियों के त्रि-स्तरीय वितरण का प्रावधान किया है। इसमें तीन सूचियाँ हैं - संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। **(ii)** संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय हैं। **(iii)** पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की ज़रूरत है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची में डाला गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार सिर्फ़ केंद्र सरकार को है। **(iv)** राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ़ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है। **(v)** समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मज़दूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केंद्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं | **(vi)** इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केंद्र सरकार और राज्य सरकारों दोनों को है। यदि दोनों के कानूनों में कोई टकराव हो, तो केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून ही मान्य होता है। **(vii)** उपरोक्त तीन सूचियों के अलावा, बाकी बचे विषयों से संबंधित एक अलग प्रावधान है जो इन तीन सूचियों में विशेष रूप से उल्लेखित नहीं हैं। इसमें कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर, साइबर कानून, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषय शामिल हैं। हमारे संविधान के अनुसार, केंद्र सरकार के पास इन बाकी बचे विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है। **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**16-17**	**3x1=3**
27.	**(a) भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों के महत्त्व की व्याख्या कीजिए |** **(i)** राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं। **(ii)** दल अलग-अलग नीतियाँ और कार्यक्रम पेश करती हैं और मतदाता उनमें से चुनते हैं।	**48-50**	**5x1=5**

	(iii) पार्टियाँ देश के लिए कानून बनाने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। **(iv)** दल ही सरकार बनाते और चलाते हैं। पार्टियाँ नेता चुनती हैं, उनको प्रशिक्षित करती हैं और फिर पार्टी के सिद्धांतों और कार्यक्रम के अनुसार फैसले लेने के लिए उन्हें मंत्री बनाती हैं| **(v)** चुनाव हारने वाले दल शासक दल के विरोधी पक्ष की भूमिका निभाते हैं | सरकार की गलत नीतियों और असफलताओं की आलोचना करने के साथ वह अपनी अलग राय भी रखती हैं | विपक्षी दल सरकार के खिलाफ आम जनता को भी गोलबंद करते हैं | **(vi)** जनमत-निर्माण में दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं|वे मुद्दों को उठाते और उनपर बहस करते हैं| **(vii)** दल ही सरकारी मशीनरी और सरकार द्वारा चलाये जाने वाले कल्याण कार्यक्रमों तक लोगों की पहुँच बनाते हैं। **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) भारत में राजनीतिक दलों के सम्मुख चुनौतियों की व्याख्या कीजिए|** **(i)** पहली चुनौती है पार्टी के भीतर आंतरिक लोकतंत्र का न होना | सारी दुनिया में यह प्रवृति बन गई है कि सारी ताकत एक या कुछेक नेताओं के हाथ में सिमट जाती है | पार्टियों के पास न सदस्यों की खुली सूची होती है, न नियमित रूप से सांगठनिक बैठकें होती हैं| इनके आंतरिक चुनाव भी नहीं होते| **(ii)** दूसरी चुनौती है- वंशवाद की चुनौती| चूँकि अधिकांश दल अपना कामकाज पारदर्शी तरीके से नहीं करते इसलिए सामान्य कार्यकर्ता के नेता बनने और ऊपर आने की गुंजाइश काफी कम होती है| जो लोग नेता होते हैं वे अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों और यहाँ तक कि अपने परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते हैं | **(iii)** तीसरी चुनौती है- दलों के अन्दर धन का बढ़ता महत्व, विशेष कर चुनावों के दौरान | चूँकि पार्टियों की सारी चिंता चुनाव जीतने की होती है अतः इसके लिए कोई भी जायज-नाजायज तरीका अपनाने से वे परहेज नहीं करतीं | वे उन उम्मीदवारों को नामित करने की प्रवृत्ति रखते हैं	**57-58**	**5x1=5**

	जिनके पास बहुत पैसा है या जो बहुत पैसा जुटाते हैं। किसी पार्टी को ज्यादा धन देने वाली कम्पनियाँ और अमीर लोग उस पार्टी की नीतियों और फैसलों को भी प्रभावित करते हैं | **(iv)** अपराधी तत्वों का राजनीतिक दलों में बढ़ता प्रभाव भी दलों के समक्ष चौथी चुनौती है | कई बार पार्टियाँ चुनाव जीत सकने वाले अपराधियों का समर्थन करती हैं| **(v)** पाँचवीं चुनौती पार्टियों के बीच विकल्पहीनता की स्थिति है | सार्थक विकल्प का मतलब होता है कि विभिन्न पार्टियों की नीतियों और कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण अंतर हो | हाल के वर्षों में दलों के बीच वैचारिक अंतर कम होता गया है और यह प्रवृति दुनिया-भर में दिखती है | जैसे, ब्रिटेन की लेबर पार्टी और कंजरवेटिव पार्टी के बीच अब बड़ा कम अंतर रह गया है| **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं पांच बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
28.	**दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए |** **सत्ता की साझेदारी के रूप** *राजनीतिक सत्ता का बंटवारा नहीं किया जा सकता- इसी धारणा के विरुद्ध सत्ता की साझेदारी के विचार सामने आया था | लम्बे समय से यही मान्यता चली आ रही थी कि सरकार की सारी शक्तियाँ एक व्यक्ति या किसी खास स्थान पर रहने वाले व्यक्ति-समूह के हाथ में रहनी चाहिए | अगर फैसले लेने की शक्ति बिखर गई तो तुरंत फैसले लेना और उन्हें लागू करना संभव नहीं होगा | लेकिन, लोकतंत्र के प्रादुर्भाव के साथ यह धारणा बदल गई | लोकतंत्र का एक बुनियादी सिद्धांत है कि जनता ही सारी राजनैतिक शक्ति का स्रोत है | इसमें लोग स्व-शासन की संस्थाओं के माध्यम से अपना शासन चलाते हैं | एक अच्छे लोकतान्त्रिक शासन में समाज के विभिन्न समूहों और उनके विचारों को उचित सम्मान दिया जाता है और सार्वजानिक नीतियाँ तय करने में सबकी बातें शामिल होती हैं | इसलिए उसी लोकतान्त्रिक शासन को अच्छा माना जाता है जिसमें ज़्यादा से ज़्यादा नागरिकों को राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदार बनाया जाए |* **28.1 सत्ता की साझेदारी राजनीतिक स्थिरता को कैसे बढ़ावा देती है ? 1** **(i)** सत्ता की साझेदारी के माध्यम से लोग सीधे राजनीतिक प्रणाली में भाग लेते हैं। इससे सरकार को वैधता और स्थिरता मिलती है।	**8**	**1+1+2=4**

	(ii) समाज में मौजूद विभिन्न समूहों और दृष्टिकोणों को उचित सम्मान दिया जाता है, जिससे संघर्ष और हिंसा की संभावना कम होती है। यह राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करता है। **(iii)** सत्ता में साझेदारी प्रत्येक व्यक्ति को सार्वजनिक नीतियों को आकार देने में अपनी आवाज़ देने का अवसर देती है। इस प्रकार, यह राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित करती है। **(iv)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है |** **28.2 दवाब समूह किस प्रकार सत्ता की साझेदारी व्यवस्था का हिस्सा हैं ? 1** **(i)** लोकतंत्र में व्यापारी, उद्योगपति, किसान और औद्योगिक मजदूर जैसे कई संगठित हित-समूह होते हैं| **(ii)** सरकार की विभिन्न समितियों में सीधी भागीदारी करके या नीतियों पर अपने सदस्य-वर्ग के लाभ के लिए दबाव बनाकर ये समूह सत्ता में भागीदारी करते हैं| **(iii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु| **किसी एक बिंदु की व्याख्या अपेक्षित है |** **28.3 सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र की भावना में कैसे योगदान करती है ? 2** **(i)** सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र की आत्मा है | **(ii)** लोकतंत्र का मतलब ही होता है कि जो लोग इस शासन-व्यवस्था के अंतर्गत हैं उनके बीच सत्ता को बाँटा जाए और ये लोग इसी ढर्रे में रहें | **(iii)** सत्ता की साझेदारी सरकार को वैधता प्रदान करती है | वैध सरकार वही है जिसमें अपनी भागीदारी के माध्यम से सभी समूह शासन व्यवस्था से जुड़ते हैं | **(iv)** सत्ता का बंटवारा ठीक है क्योंकि इससे विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव का अंदेशा कम हो जाता है | चूँकि सामाजिक टकराव आगे बढ़कर अक्सर हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेता है | इसलिए सत्ता की साझेदारी राजनीतिक व्यवस्था की स्थिरता के लिए आवश्यक है | **(v)** सत्ता की साझेदारी सरकार में लोगों की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करती है, सार्वजनिक मुद्दों पर सबकी राय ली		

	जाती है और इस प्रकार यह बहुसंख्यकों की निरंकुशता को रोकती है | **(vi)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं दो बिन्दुओं कि व्याख्या अपेक्षित है |**		
	खंड -घ **(अर्थशास्त्र)**		**20**
29.	**(A)** 12	**10**	**1**
30.	**(A)** निजी क्षेत्रक	**33**	**1**
31.	**(B)** ऋण की लागत	**44-45**	**1**
32.	**(C)** देश में विदेशी व्यापार को विनियमित करना |	**64**	**1**
33.	**(D)** भूमिगत जल	**14**	**1**
34.	**(A)** एक	**10**	**1**
35.	**"तकनीक में प्रगति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया है |" उपयुक्त तर्कों द्वारा इस कथन को न्यायसंगत ठहराइए |** **(i)** तकनीक/प्रौधोगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है जिसने वैश्वीकरण कि प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया | जैसे, विगत पचास वर्षों में परिवहन प्रौधोगिकी में बहुत उन्नति हुई है | इसने लम्बी दूरियों तक वस्तुओं को तीव्रतर आपूर्ति को कम लागत पर संभव किया है | **(ii)** दूरसंचार सुविधाओं (टेलीग्राफ, टेलीफोन, मोबाइल फोन एवं फैक्स) का विश्व पर एक-दूसरे से संपर्क करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने और दूरवर्ती क्षेत्रों से संवाद करने में प्रयोग किया जाता है | **(iii)** संचार उपग्रहों के कारण सूचना और संचार तकनीक में और बढ़ोत्तरी हुई है | **(iv)** सूचनाओं को प्राप्त करने और आपस में साझा करने के तरीके में इंटरनेट ने काफी बदलाव कर दिया है | इंटरनेट से हम तत्काल इलेक्ट्रोनिक डाक (ई-मेल) भेज सकते हैं और अत्यंत कम मूल्य पर विश्व-भर में बात (वॉयस मेल) कर सकते हैं | **(v)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**	**63-67**	**3x1=3**
36.	**भारतीय अर्थव्यवस्था में रिज़र्व बैंक की भूमिका को स्पष्ट**	**48**	**3x1=3**

	कीजिए | **(i)** भारतीय रिज़र्व बैंक सरकार की ओर से मुद्रा जारी करता है | **(ii)** भारतीय रिज़र्व बैंक ऋण के औपचारिक स्रोतों की कार्यप्रणाली पर नज़र रखता है | **(iii)** रिज़र्व बैंक नज़र रखता है कि बैंक वास्तव में नकद शेष बनाए हुए हैं | बैंकों को अपनी जमा का एक न्यूनतम नकद हिस्सा अपने पास रखना होता है | **(iv)** भारतीय रिज़र्व बैंक इस पर भी नज़र रखता है कि बैंक केवल लाभ अर्जित करने वाले व्यवसायियों और व्यापारियों को ही ऋण मुहैया नहीं करा रहे, बल्कि छोटे किसानों, छोटे उद्योगों, छोटे कर्जदारों इत्यादि को भी ऋण दे रहे हैं | **(v)** भारतीय रिज़र्व बैंक यह सुनिश्चित करता है कि सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज सभी को उपलब्ध हो| सस्ता और सामर्थ्य के अनुकूल कर्ज देश के विकास में लिए अति आवश्यक है | **(vi)** समय-समय पर बैंकों द्वारा आर. बी. आई. को यह जानकारी देनी पड़ती है कि वे कितना और किनको ऋण दे रहे हैं और उसकी ब्याज की दरें क्या है? **(vii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
37.	**"अलग-अलग लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते हैं| उदाहरणों सहित इस कथन कि व्याख्या कीजिए |** **(i)** प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षाएँ और इच्छाएँ अलग-अलग होती हैं क्योंकि विकास या प्रगति का अर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग होता है। **(ii)** उदाहरण के लिए- एक भूमिहीन ग्रामीण मजदूर काम करने के अधिक दिन और बेहतर मजदूरी; स्थानीय स्कूल में अपने बच्चों के लिए उत्तम शिक्षा; कोई सामाजिक भेदभाव नहीं हो और गांव में वे भी नेता बन सकें; की आकांक्षा रखता है | **(iii)** पंजाब के समृद्ध किसान अपनी उपज के लिए उच्च समर्थन मूल्य और मेहनती एवं सस्ते मजदूरों द्वारा उच्च पारिवारिक आय की आकांक्षा रखता है ताकि वे अपने बच्चों को विदेशों में बसा सकें |	**4-5**	**3x1=3**

	(iv) एक अमीर शहरी परिवार की लड़की को अपने भाई के समान स्वतंत्रता मिलती है और वह अपने फैसले खुद सकती है कि वह जीवन में क्या करना चाहती है। वह विदेश में अपनी पढ़ाई विदेश में कर सकती है। **(v)** दो व्यक्ति या व्यक्ति गुट ऐसी चीजें चाह सकते हैं, जिनमें परस्पर विरोध हो सकता है | एक लड़की भाई के समकक्ष स्वतंत्रता और अवसर मिलने और भाई भी घर के कामकाज में हाथ बंटायेगा, की आशा रखती है | हो सकता है कि भाई को यह पसंद न हो | **(vi)** इसी तरह, अधिक बिजली पाने के लिए उद्योगपति ज्यादा बाँध चाहते हैं | लेकिन इससे जमीन जलमग्न हो सकती है और उन लोगों का जीवन अस्तव्यस्त हो सकता है जो बेघर हो जायें, जैसे कि आदिवासी| वे इसका विरोध कर सकते हैं और हो सकता है कि वे अपने खेतों की सिंचाई के लिए केवल छोटे चेक बाँध या तालाब पसंद करें | **(vii)** कभी-कभी एक के लिए जो विकास है वह दूसरे के लिए विकास न हो | यहाँ तक कि वह दूसरे के लिए विनाशकारी भी हो सकता है | **(viii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं तीन बिन्दुओं की व्याख्या अपेक्षित है |**		
38	**(a) अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्रक के महत्व का वर्णन कीजिए |** **(i)** तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं। **(ii)** ये गतिविधियाँ स्वतः वस्तुओं का उत्पादन नहीं करती हैं, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में सहयोग या मदद करती हैं। **(iii)** तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है। **(iv)** जैसे प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित वस्तुओं को थोक एवं खुदरा विक्रेताओं को बेचने के लिए ट्रकों और ट्रेनों द्वारा परिवहन करने की ज़रूरत पड़ती है। कभी-कभी वस्तुओं को गोदामों में भण्डारित करने की आवश्यकता होती है। **(v)** हमें उत्पादन और व्यापार में सहूलियत के लिए टेलीफोन पर दूसरों से वार्त्तालाप करने या पत्राचार (संवाद) या बैंकों से कर्ज लेने की भी आवश्यकता होती है। **(vi)** परिवहन, भण्डारण, संचार, बैंक सेवाएँ और व्यापार तृतीयक गतिविधियों के कुछ उदाहरण हैं। ये गतिविधियाँ वस्तुओं के बजाय सेवाओं का सृजन करती हैं |	**20**	**5x1=5**

	(vii) सेवा क्षेत्र में कुछ ऐसी अपरिहार्य सेवाएँ भी हैं जैसे- हमें शिक्षकों, डॉक्टरों, धोबी, नाई, मोची एवं वकील जैसे व्यक्तिगत सेवाएँ उपलब्ध कराने वाले और प्रशासनिक एवं लेखाकरण कार्य करने वाले लोगों की आवश्यकता होती है। **(viii)** वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ जैसे, इंटरनेट कैफे, ए. टी. एम. बूथ, कॉल सेंटर, सॉफ्टवेयर कम्पनी इत्यादि भी महत्त्वपूर्ण हो गई हैं। **(ix)** इस प्रकार, यह क्षेत्रक रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है | **(x)** यह देश के जीडीपी में योगदान देता है और राजस्व उत्पन्न करता है। वास्तव में, कई वर्षों से भारतीय जीडीपी में सेवा क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक है। **(xi)** यह क्षेत्रक जीवन की गुणवत्ता को बढाता है। **(xii)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं पांच बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित है |** **अथवा** **(b) अर्थव्यवस्था के संगठित क्षेत्रक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए |** **(i)** संगठित क्षेत्रक में वे उद्यम अथवा कार्य- स्थान आते हैं जहाँ रोज़गार की अवधि नियमित होती है और इसलिए लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है। **(ii)** ये सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं और उन्हें सरकारी नियमों एवं विनियमों का अनुपालन करना होता है। इन नियमों एवं विनियमों का अनेक विधियों, जैसे, कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, सेवानुदान अधिनियम, दुकान एवं प्रतिष्ठान अधिनियम, इत्यादि में उल्लेख किया गया है | **(iii)** इसे संगठित क्षेत्रक कहते हैं क्योंकि इसकी कुछ औपचारिक प्रक्रिया एवं कार्यविधि है। । **(iv)** कुछ लोग किसी के द्वारा नियोजित नहीं होते बल्कि वे स्वतः काम कर सकते हैं। परन्तु वे भी अपने को सरकार के समक्ष पंजीकृत कराते हैं और नियमों एवं विनियमों का अनुपालन करते हैं। **(v)** संगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों को रोजगार सुरक्षा के लाभ मिलते हैं। उनसे एक निश्चित समय तक ही काम करने की आशा की जाती है।	**30-31**	**5x1=5**

	(vi) यदि वे अधिक काम करते हैं तो नियोक्ता द्वारा उन्हें अतिरिक्त वेतन दिया जाता है। **(vii)** वे नियोक्ता से कई दूसरे लाभ भी प्राप्त करते हैं। जैसे - सवेतन छुट्टी, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि, सेवानुदान इत्यादि पाते हैं। **(viii)** वे चिकित्सीय लाभ पाने के हकदार होते हैं और नियमों के अनुसार कारखाना मालिक को पेयजल और सुरक्षित कार्य - पर्यावरण जैसी सुविधाओं को सुनिश्चित करना होता है। **(ix)** जब वे सेवानिवृत होते हैं, तो पेंशन भी प्राप्त करते हैं। **(x)** कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु | **किन्हीं पांच बिन्दुओं का वर्णन अपेक्षित है |**		
	नोट- प्रश्न संख्या 9 एवं प्रश्न संख्या 19 के लिए कृपया मानचित्र देखिए |		

प्रश्न सं. 9 और 19 के लिए मानचित्र
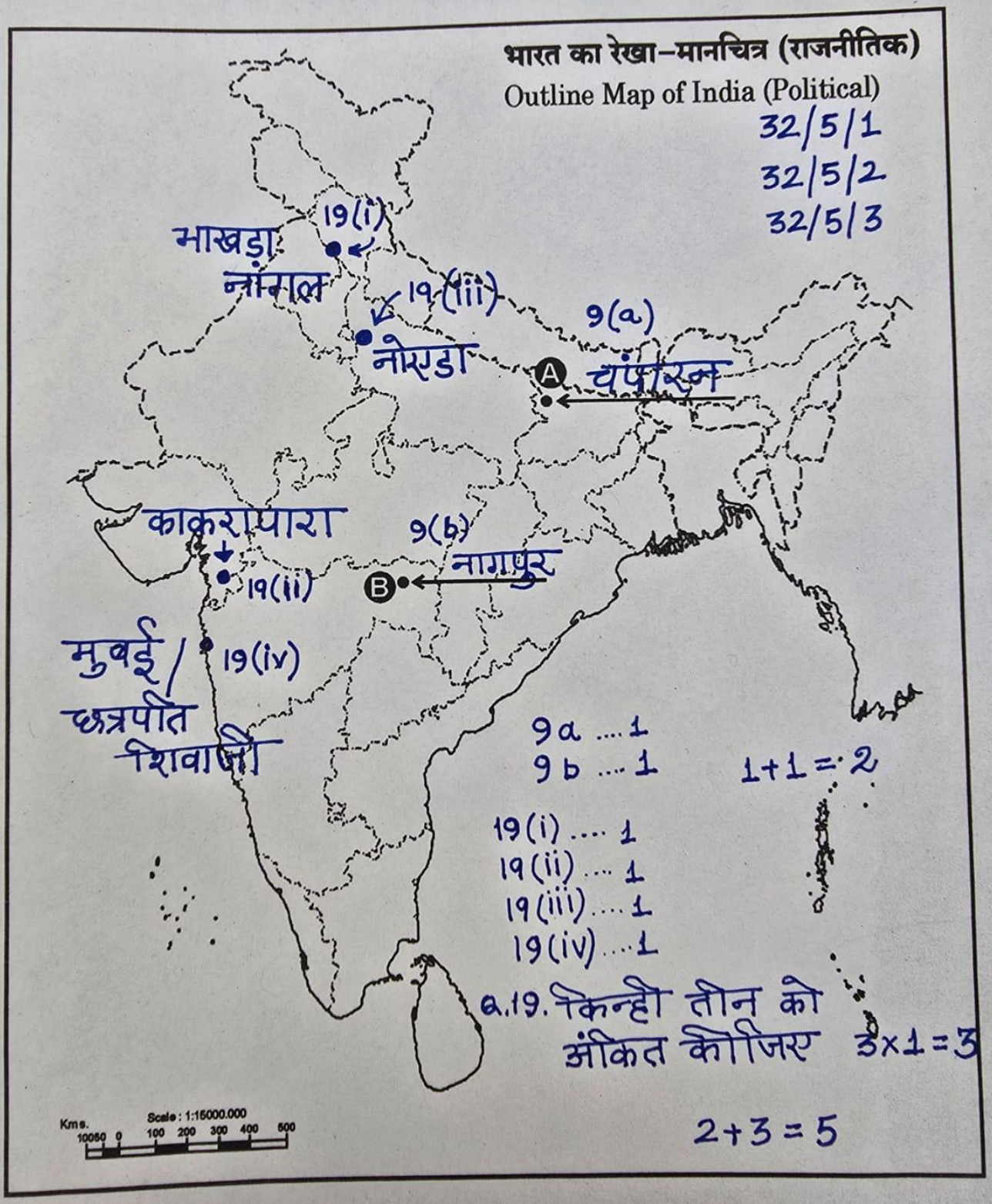
Map for Q. No. 9 and 19